

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja College Ara
Date; 3/11/2025
Class: U.G Semester - 3rd
(MJC-3)
Developmental Psychology,
Topic -

संज्ञानात्मक एवं भाषा विकास

COGNITIVE AND LANGUAGE DEVELOPMENT

संज्ञानात्मक विकास का अर्थ (Meaning of Cognitive Development)

संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य चिन्तन में गुणात्मक परिवर्तन से है। यह तंत्रिका विज्ञान एवं मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र है, जिसमें बालक के सूचना प्रसंस्करण, भाषा अधिगम एवं मस्तिष्क के विकास के अन्य पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अतः संज्ञानात्मक विकास का प्रयोग बौद्धिक विकास हेतु किया जाता है। बौद्धिक विकास एक सतत प्रक्रिया है। बौद्धिक विकास में प्रतिमानित (Patterned) प्रतिक्रियाएँ निहित होती हैं जिसमें संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, तर्क एवं कल्पना आदि मानसिक व्यवहारों का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। बालकों के बौद्धिक विकास में संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण का विशेष स्थान होता है। 'संज्ञान' शब्द का अर्थ है 'जानना' या 'समझना'। यह एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें विचारों के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। संज्ञानात्मक विकास शब्द का प्रयोग मानसिक विकास के व्यापक अर्थ में किया जाता है, जिसमें बुद्धि के अतिरिक्त सूचना का प्रत्यक्षीकरण, पहचान (Recognition), प्रत्याह्वान (Remembering) एवं व्याख्या आता है। इस प्रकार संज्ञान में मानव की विभिन्न मानसिक गतिविधियों का समन्वय होता है। मनोवैज्ञानिक 'संज्ञान' का प्रयोग ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में करते हैं। रेबर के अनुसार, "अधिकांश मनोवैज्ञानिकों के अनुसार संज्ञान का तात्पर्य ऐसे मानसिक व्यवहारों से है, जिसका स्वरूप अमूर्त होता है एवं जिनमें प्रतीकीकरण, सूझ प्रत्याशा, जटिल नियम उपयोग, विश्वास, अभिप्राय, समस्या समाधान एवं अन्य शामिल होते हैं।"

संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएँ (Characteristics of Cognitive Development)

संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (1) संज्ञानात्मक विकास एक जटिल मानसिक या बौद्धिक प्रक्रिया है जो अमूर्त रूप से चलती रहती है। इसमें प्रत्यक्षीकरण, स्मरण, चिन्तन, निर्णय, समस्या समाधान शामिल है।
- (2) संज्ञान से तात्पर्य बौद्धिक विकास से है। अतः बुद्धि संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती है। यह एक वैयक्तिक प्रक्रिया है जो सामान्य से विशिष्ट की ओर चलती है।
- (3) इस प्रक्रिया का विकास शैशवावस्था से पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है।
- (4) संज्ञानात्मक विकास के लिए ज्ञानेन्द्रियों का विकास एवं परिपक्वता आवश्यक है।

(5) इसके द्वारा मानव में अधिगम क्षमता में वृद्धि होती है। नाड़ी संस्थान के विकास के साथ-साथ संज्ञानात्मक विकास में भी वृद्धि होती रहती है।

(6) संज्ञान एक अर्जित योग्यता है जो जीवनपर्यन्त चलती रहती है, साथ ही वातावरण के साथ समायोजन भी स्थापित करती है।

(7) इस विकास का मूलधार संवेदना एवं प्रतीक निर्माण है। संज्ञान से ही मानव देखकर, समझकर, अनुभव करके रके सम्बन्धित ज्ञान को ग्रहण करता है।

संज्ञानात्मक विकास प्रक्रिया के सोपान (Stages of Cognitive Development Process)

संज्ञानात्मक प्रक्रिया के मुख्यतया छः सोपान हैं ध्यान, धारणा, स्मृति, भाषा, शिक्षा और उच्च तर्क। ये सभी प्रक्रियाएँ अन्योन्याश्रित हैं और एक साथ एकीकृत रूप में चलती हैं। ये सोपान संज्ञानात्मक प्रक्रिया में अनुभवात्मक और चिंतनशील भूमिका को निभाते हैं। संज्ञानात्मक प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों का विवरण निम्नलिखित हैं-

(1) ध्यान (Attention) ध्यान किसी वस्तु पर केन्द्रीकृत होने की प्रक्रिया है। यह वस्तु मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में हो सकती है। क्योंकि छात्र विषय-वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करके ही किसी तथ्य का प्रभावपूर्ण तरीके से अधिगम कर सकता है।

(2) धारणा (Perception) धारणा आस-पास के वातावरण से जानकारी प्राप्त करके और इसे संशोधित करने की एक प्रक्रिया है। धारणा सांसारिक सम्प्रत्ययों को देखने के दृष्टिकोण का विकास करती है। बालक अपने संवेदी अंगों एवं ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जिह्वा और अंगुलियाँ) के माध्यम से जानकारी एकत्र करके सम्प्रत्ययों के प्रति धारणाओं का निर्माण करता है।

(3) स्मृति (Memory) स्मृति, ज्ञान को संग्रहीत करने, खोजने तथा पुनस्मरण करने की प्रक्रिया है। बालक सीखे गए ज्ञान को अपनी स्मृति में संग्रहित कर सकता है और उचित उद्दीपन प्रकट होने पर तत्सम्बन्धी ज्ञान के अनुरूप अनुक्रिया करता करता है। संज्ञानात्मक प्रक्रिया का उद्देश्य उपर्युक्त प्रक्रिया के लिए विद्यार्थी को तैयार करना है।

(4) भाषा (Language) - भाषा पढ़ने, लिखने, बोलने, सुनने और संवाद के माध्यम से समझ का विकास करने की प्रक्रिया है। हालाँकि माध्यम के रूप में भाषा के विभिन्न आयाम होते हैं, जैसे- स्थायित्व, क्षिद्रान्वेषी क्षमता, व्यावहारिक उपयोग तथा आवश्यक संज्ञानात्मक प्रयास जो संज्ञानात्मक प्रक्रिया के विकास में सहायक होते हैं।

(5) अधिगम (Learning)- अधिगम, नवीन ज्ञान के प्रति जिज्ञासा तथा उसे प्राप्त करने की संश्लेषित प्रक्रिया है। संज्ञानात्मक प्रक्रिया के अधिगम सोपान में अन्तर क्रियाशीलता एक महत्वपूर्ण तत्व होता है।

(6) उच्च तर्क (Higher Reasoning)-तर्क एक चिन्तनशील अनुभूति की प्रक्रिया है। जिसमें समस्या समाधान, योजना, तर्क, निर्णय लेना इत्यादि अवयव शामिल होते हैं। इनमें से अधिकांश सचेतन प्रक्रिया जिसके लिए व्यापक विचार-विमर्श की आवश्यकता होती है, और बालक स्वयं में अथवा अन्य लोगों के साथ संलग्न हो सकता है।